सूरजमुखी खिलते हैं जहाँ

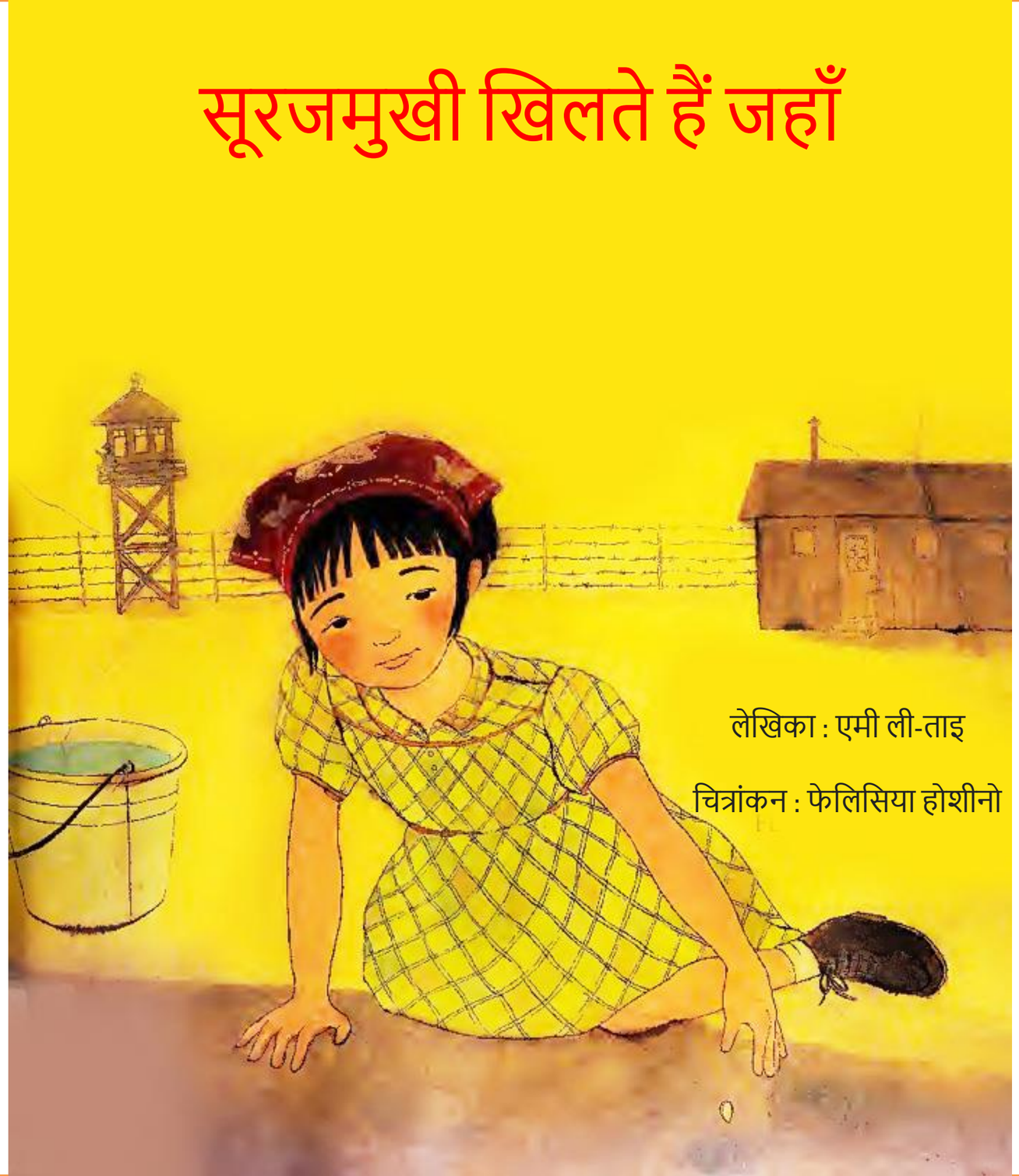

लेखिका : एमी ली-ताइ

चित्रांकन : फेलिसिया होशीनो

सूरजमुखी खिलते हैं जहाँ

लेखिका : एमी ली-ताइ

चित्रांकन : फेलिसिया होशीनो

प्रस्तावना

सन १९४२ में अमेरिका की सरकार ने १,२०,००० निर्दोष जापानी मूल के अमेरिका निवासियों को नज़रबंदी शिविरों में कैद कर लिया था। तब अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान के साथ युद्ध कर रहा था, और वहां की सरकार ने निर्णय लिया कि जापानी अमेरिकनों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, केवल इसलिए कि उनके पूर्वज जापान से आये थे।

मेरी माँ के परिवार को घर छोड़ने के लिए केवल १० दिन का समय दिया गया। उन्हें केवल वही सामान साथ लाने की अनुमति दी गई जिसे वे स्वयं ढो सकते थे। मेरे दादा-दादी चित्रकार थे, और उन्हें अपनी बनाई सैंकड़ों कलाकृतियां पीछे छोड़नी पड़ीं। अंततः उन्हें यूटा के रेगिस्तान में स्थित टोपाज पुनर्वास केंद्र को भेज दिया गया, जहाँ उन्हें साढ़े तीन वर्ष तक रहना पड़ा।

पुनर्वास केंद्र के शिविरों में जीवन अन्याय और कठिनाइयों से भरा था। फिर भी इन नज़रबंद लोगों ने अपने मानवीय आत्म-सम्मान की रक्षा का भरपूर प्रयास किया। मेरे दादा-दादी ने कला की ओर अपना रुख किया, क्योंकि न केवल वह उन्हें प्रिय थी, वे उसमें माहिर भी थे।

मेरे नाना ने "टोपाज़ कला विद्यालय" की शुरुआत की, जहाँ वह और नानी चित्रकारी का प्रशिक्षण करने लगे। मेरी माँ और मामा भी कला के विद्यार्थी थे। कला ने मेरी माँ के परिवार के जीवन को एक दिशा और लक्ष्य ही नहीं, जीवन के एक बड़े मुश्किल समय में शांति भी प्रदान की, और सभी नज़रबंद लोगों को अभिव्यक्ति का एक मौका दिया।

मैंने अपनी माँ के अनुभव को इस कहानी का आधार-बिंदु बनाया है। परन्तु इस कहानी के पात्र और अधिकांश घटनाएं काल्पनिक हैं। मुझे आशा है कि तुम इस कहानी से कुछ सीख पाओगे, और एक ऐसे संसार की रचना का प्रयास करोगे, जिसमें किसी भी समुदाय के साथ दोबारा ऐसा नहीं होगा, जो दूसरे विश्व युद्ध के समय अमेरिका के जापानी समुदाय के साथ हुआ।

- एमी ली-ताइ

मारी ने धरती की ओर ग़ौर से देखा। अभी एक हफ्ता ही हुआ था, जब उसने और उसकी माँ ने अपने नए घर के बाहर मुट्ठी भर सूरजमुखी के बीज बोये थे। मारी ने माँ से पूछा, "क्या ये फूलों के पौधे भी बढ़ कर उतने ही ऊँचे, मज़बूत और खूबसूरत हो जायेंगे, जैसे हमारे पुराने घर के पिछबाड़े में होते थे?"

"इसमें समय लगेगा, और तुम्हें धीरज रख कर इनकी देखभाल करनी होगी," माँ ने प्यार से कहा।

"हाँ, रेगिस्तान में फूल आसानी से नहीं उगते," मारी ने कहा। उसने मई की गर्म धूप में तपती रेत को घूर कर देखा, मानो ऐसा करने से उन बीजों में तुरंत अंकुर निकल कर बाहर आ जायेंगे। लेकिन उसे वहां केवल रेत के खुश्क कतरे ही दिखाई दिए।

बोये हुए बीजों में पानी डालते-डालते मारी अपने परिवार के कैलिफ़ोर्निया स्थित घर के बारे में सोच रही थी। वहां जब उसके कलाकार माता-पिता चित्रों में रंग भर रहे होते, मारी और उसका बड़ा भाई केंजी अपने फूलों से भरे बगीचे में खेलते कूदते थे।

क्या इस बात को केवल तेरह महीने हुए थे, जब उन्हें अपना घर छोड़ने को मजबूर किया गया था? पहले तो उन्हें तंफोरन कैलिफ़ोर्निया के एक अस्तबल में रहना पड़ा, जहाँ घोड़ों की लीद की बदबू आया करती थी। अब वे टोपाज, यूटाह में एक बैरक में रह रहे थे। उसके परिवार के अलावा मारी का सब-कुछ उससे छीन लिया गया था, जबकि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था।

"मारी-चान, तीन बज रहे हैं, अब कला-स्कूल जाने का समय है।" उसके पिता की प्यार भरी आवाज़ ने मारी को अपने ख़यालों की दुनिया से वापस वर्तमान में खेंचा। "हमें देर नहीं करनी चाहिए, बेटी!"

मारी और उसके पापा ने ब्लॉक २९ के अपने घर से ब्लॉक ७ में स्थित टोपाज़ कला विद्यालय तक की एक मील की दूरी धूल भरी तेज़ हवा में पैदल चल कर पार की। वे एक ऊँचे मचान के नीचे से गुज़रे, जिसके ऊपर सेना के सिपाही तैनात थे, जो किसी के भागने का संदेह होते ही अपनी बंदूकें तान देते थे। मारी ने कस कर अपने पापा का हाथ पकड़ लिया।

"मारी-चान, मुझे और तुम्हारी माँ को तुम्हारी बहुत चिंता होती है," पापा ने कहा। "हम जानते हैं, यहाँ जीवन बहुत कठिन है, लेकिन तुमने तो हंसना-बोलना ही बंद कर दिया है। क्या तुम इस बारे में बात करना चाहोगी?"

"नहीं," मारी बुदबुदाई, हालाँकि उसके मन में बहुत से सवाल उठ रहे थे।

"चिंता मत करो मारी-चान, युद्ध समाप्त होने के बाद हम घर लौट जायेंगे।"

उन्होंने बाकी का रास्ता चुप-चाप ही तय किया। ऊँचे पहाड़ों, फैले आसमान, और चिलचिलाते सूरज के नीचे मारी अपने आप को सूरजमुखी के बीजों जितना छोटा महसूस कर रही थी।

टोपाज कला स्कूल में उसके पिता ने मारी को उसकी कक्षा में छोड़ा, और अगली कक्षा में चले गए, जहाँ उन्हें वयस्कों के लिए रेखाचित्र बनाने की क्लास लेनी थी। मारी को उम्मीद थी कि उसे शायद कक्षा में कुछ मित्र दिखाई देंगे, लेकिन वह किसी को भी नहीं पहचान सकी।

श्रीमती हानामोतो ने सबको कागज़ और मोम की रंगीन पेन्सिलें दीं, और कहा, "आज पहला दिन है, इसलिए जो मन चाहे बनाओ।" मारी आस-पास की मेज़ों से आती पेन्सिलों के कागज़ पर सर-सर चलने को आवाज़ों को सुन रही थी। वह बड़ी देर तक गहरी सोच में डूबी रही, लेकिन कक्षा समाप्त होने तक भी उसका कागज़ कोरा ही था।

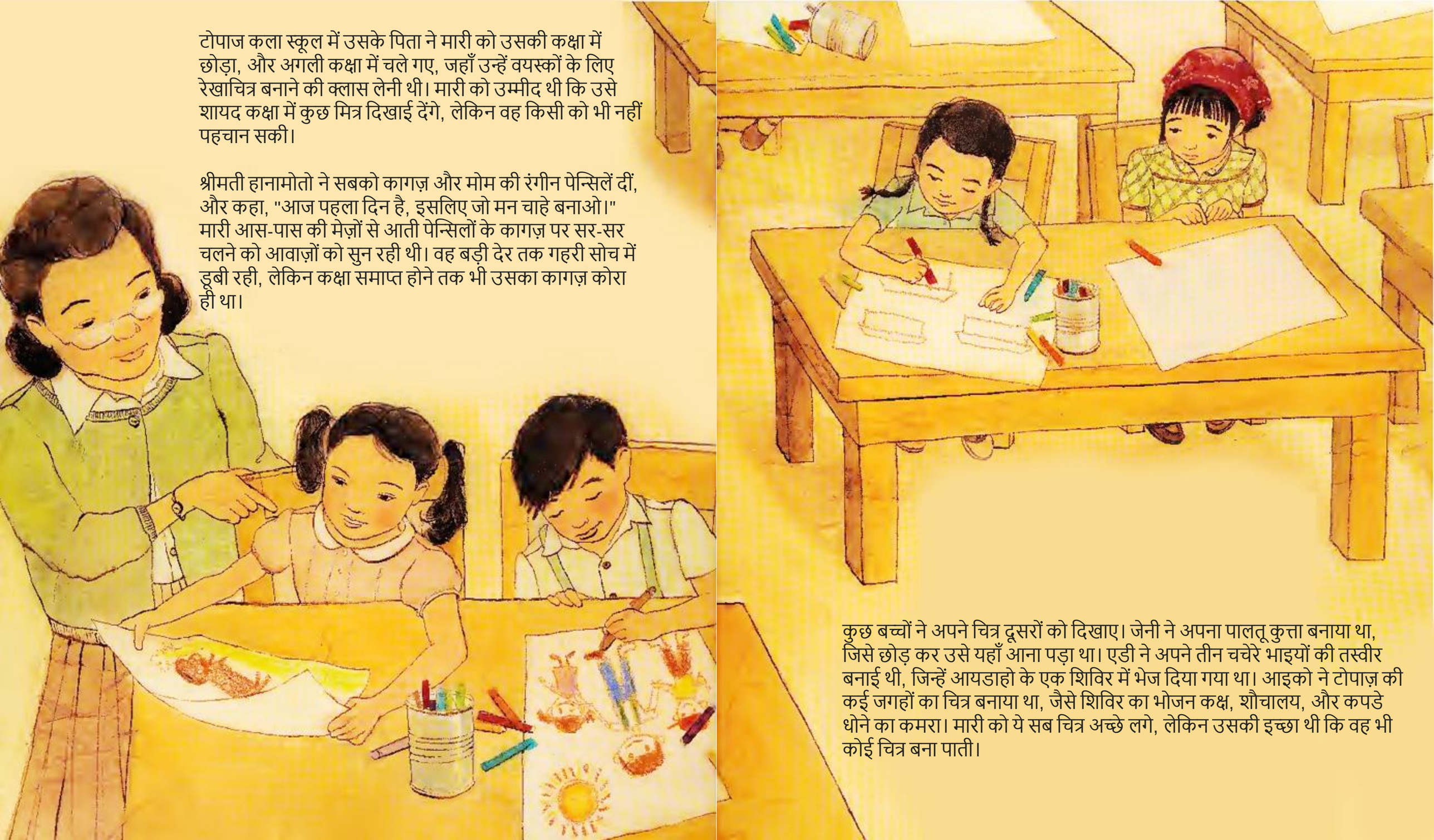

कुछ बच्चों ने अपने चित्र दूसरों को दिखाए। जेनी ने अपना पालतू कुत्ता बनाया था, जिसे छोड़ कर उसे यहाँ आना पड़ा था। एडी ने अपने तीन चचेरे भाइयों की तस्वीर बनाई थी, जिन्हें आयडाहो के एक शिविर में भेज दिया गया था। आइको ने टोपाज़ की कई जगहों का चित्र बनाया था, जैसे शिविर का भोजन कक्ष, शौचालय, और कपडे धोने का कमरा। मारी को ये सब चित्र अच्छे लगे, लेकिन उसकी इच्छा थी कि वह भी कोई चित्र बना पाती।

क्योंकि पापा को अभी एक और क्लास पढ़ानी थी, मारी अकेली ही भोजन कक्ष की ओर चल दी, जहाँ माँ और केंजी भी उसे मिल गए।

भोजन कक्ष के द्वार में प्रवेश करते ही लगता था कि जैसे किसी ने रेडियो की आवाज़ अचानक बहुत तेज़ कर दी हो। खड़कते बर्तन, ज़ोर-ज़ोर से बातें करते लोग, रोते हुए बच्चे। मारी से यह शोर बर्दाश्त नहीं हो रहा था। सभी लोग भोजन लेने के लिए लम्बी कतार में लग गए। जब तक उनकी बारी आई, पापा भी आ गए थे।

खाने पर बैठते समय पापा ने पूछा, "मारी-चान, तुम्हें अपनी कक्षा कैसी लगी ?"

"मुझे समझ ही नहीं आया कि मैं क्या चित्र बनाऊं," मारी ने कहा।

"ऐसा तो कभी कभी मेरे साथ भी होता है," पापा ने कहा।

"सच में?" मारी ने पूछा। "आप तो एक चित्रकार हैं, फिर भी?"
"हाँ," पापा मुस्कुराये, "लेकिन मैं हार नहीं मानता।"

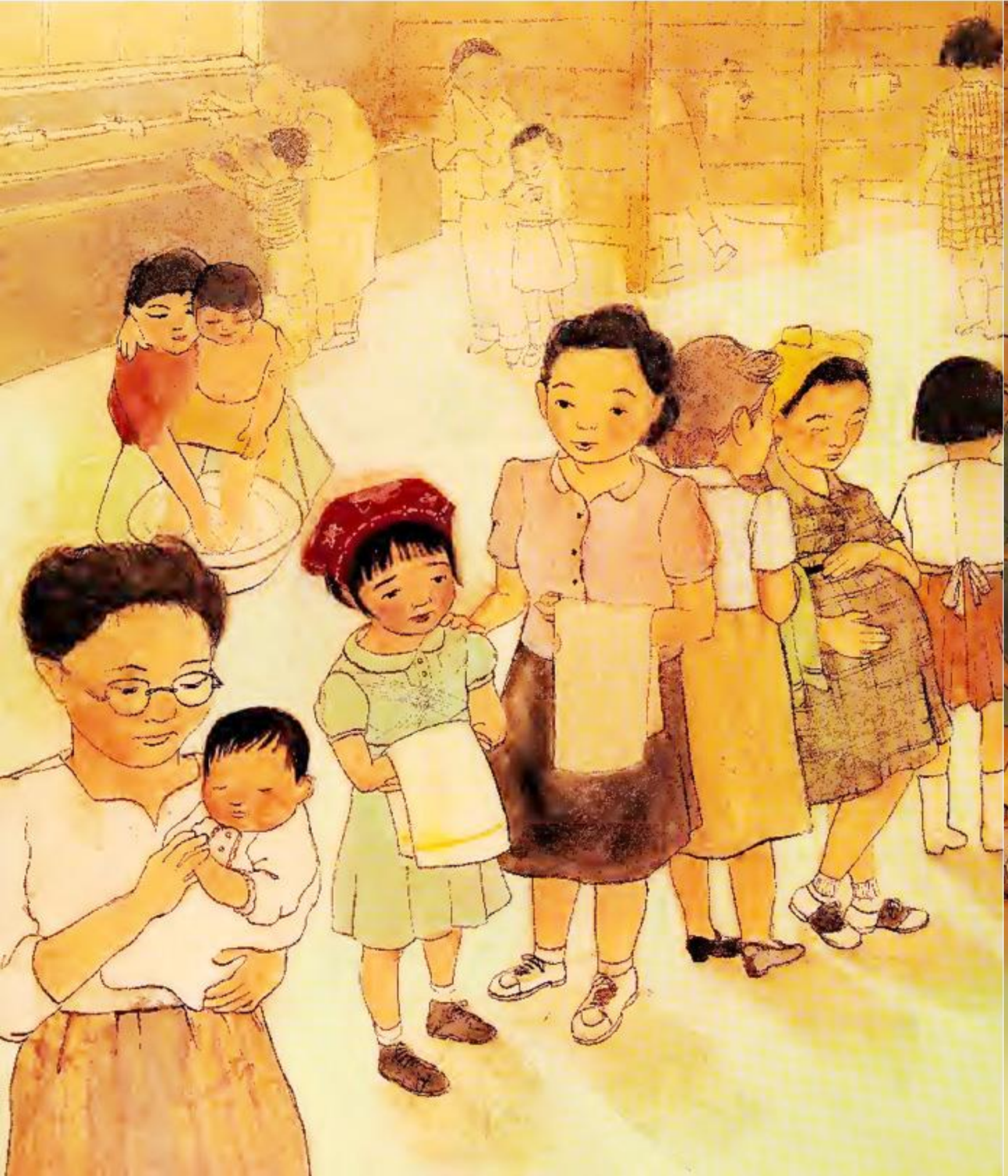

अगली क्लास के दिन सुबह, मारी और उसकी माँ को शौचालय जाने के लिए लम्बी कतार में इंतज़ार करना पड़ा। शौचालयों और स्नान-गृहों में दरवाज़े भी नहीं थे वहां। मारी और उसकी माँ को प्रयत्नपूर्वक अन्य स्त्रियों और लड़कियों पर से नज़रें हटानी पड़ रही थीं।

माँ ने पूछा, "मारी-चान, क्या तुम्हें आज की क्लास की चिंता हो रही है?"

मारी ने हामी में सर हिलाया। वह सोच रही थी कि श्रीमती हनामोटो आज उसे क्या बनाने को कहेंगी।

"पापा की सलाह याद रखना। तुम अवश्य बना पाओगी, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे सूरजमुखी के फूल स्वतः ही खिल जायेंगे।"

उस दिन दोपहर को श्रीमती हनामोटो ने कक्षा से कहा, "किसी ऐसी वस्तु का चित्र बनायें, जिससे आपको यहाँ टोपाज़ में ख़ुशी मिलती है।" एक बार फिर, मारी को कुछ नहीं सूझ रहा था। तभी श्रीमती हानामोटो उसकी मेज़ पर आ पहुंचीं।

"मारी-चान, मैंने देखा कि पिछली क्लास में तुम कुछ भी नहीं बना सकीं। कुछ अन्य छात्रों को भी यह दिक्कत आई थी।"

"अच्छा, क्या अकेली मैं ही नहीं थी?" कुछ उम्मीद भरी निगाह से मारी ने उत्तर दिया।

"नहीं, यह तो अक्सर ही होता है। तुहें बस कोशिश करते रहना है। अच्छा, अभी तुम क्या बनाने की कोशिश कर रही हो?"

"मुझे कोई ऐसी चीज़ नहीं सूझ रही है, जो मुझे यहाँ टोपाज़ में ख़ुशी देती हो।"

"तो फिर कोई ऐसी चीज़ बनाओ जिसने तुम्हें यहाँ आने से पहले ख़ुशी दी हो," श्रीमती हनामोतो ने सुझाव दिया।

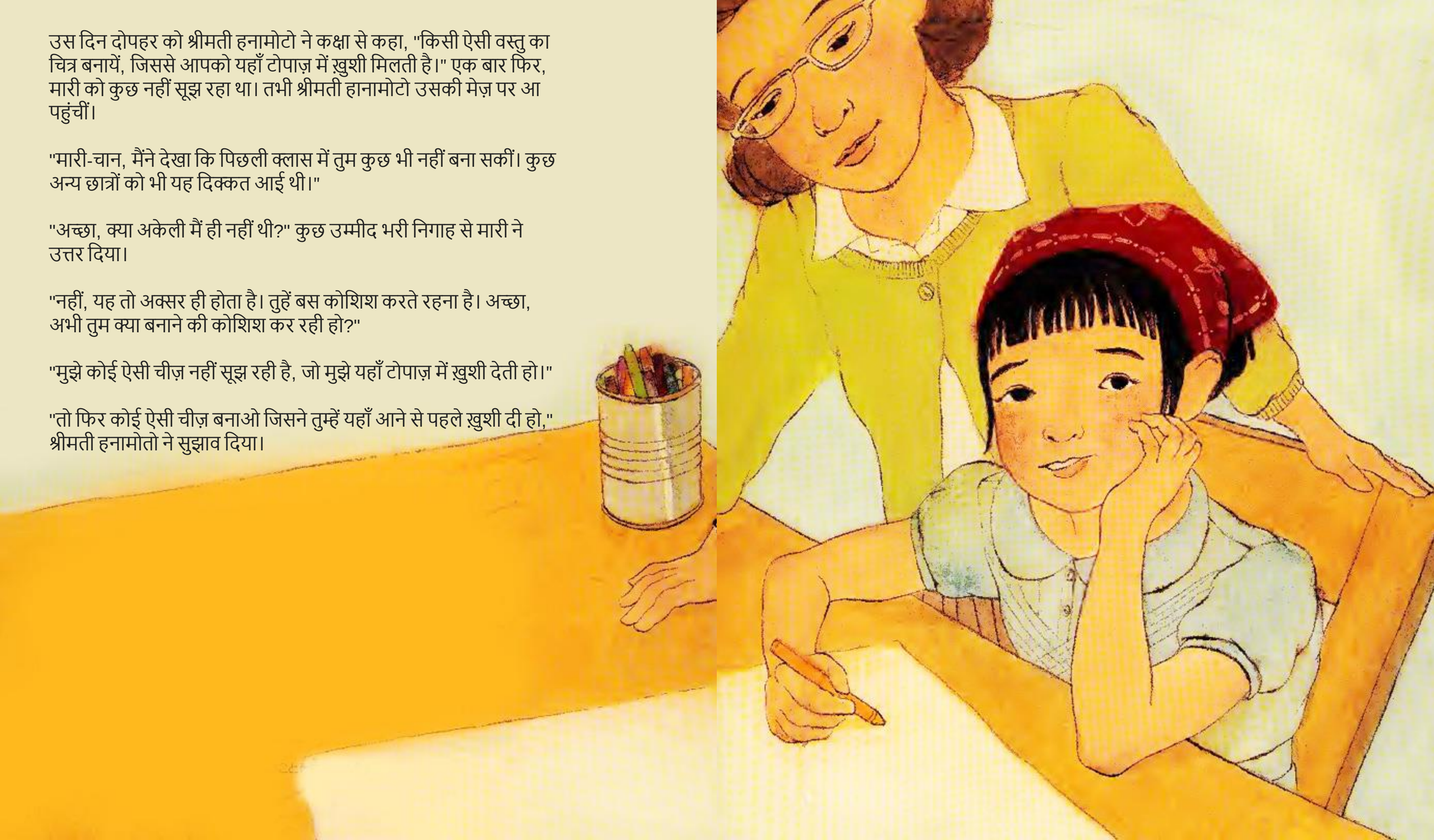

इस बार मारी को तुरंत ही सूझ गया - कैलिफ़ोर्निया में उसके घर के पिछवाड़े का बग़ीचा !

उसने पापा के बनाये हुए झूले का चित्र बनाया, और उस पेड़ का जो माँ ने लगाया था। और इंद्रधनुषी रंगों से भरे बाग़ीचे का। श्रीमती हनामोटो ने जब कहा कि कक्षा समाप्त होने को है, तब तक भी वह चित्र बनाने में व्यस्त थी।

मारी ने देखा कि उसके समीप बैठी आईको उसके चित्र की ओर देख रही थी। आईको धीमे से बोली, "तुम्हारे घर का पिछवाड़ा तो बड़ा रोचक दिखता है।"

मारी भी फुसफुसा कर बोली, "जब हम सब घर वापस पहुंच जायें, तो तुम मेरे घर ज़रूर आना।"

मारी जल्दी-जल्दी घर पहुंची, और जैसे ही घर में घुसी, माँ ने पूछा, "मारी-चान, आज तुम्हारी कक्षा कैसी रही?" उसे लग रहा था कि मारी शायद फिर चुप्पी साध लेगी।

लेकिन मारी तपाक से बोली, "श्रीमती हनामोटो बहुत अच्छी हैं। आज मैंने मोम के रंगों का इस्तेमाल किया, और यह चित्र बनाया।"

"अरे, यह तो हमारे घर के पीछे वाला बाग़ है," केंजी ने उत्साह के साथ कहा।

माँ मुस्कुराईं। "बहुत सुन्दर है यह। चलो इसे दीवार पर लटकाते हैं।"

बैरक के खुले दरवाज़े से धूप अंदर आ रही थी। मारी ने वह चित्र अपने बिस्तरे के ऊपर दीवार पर लटका दिया। इससे उनके अँधेरे, एक कमरे के घर में थोड़ी ख़ुशी आ गई।

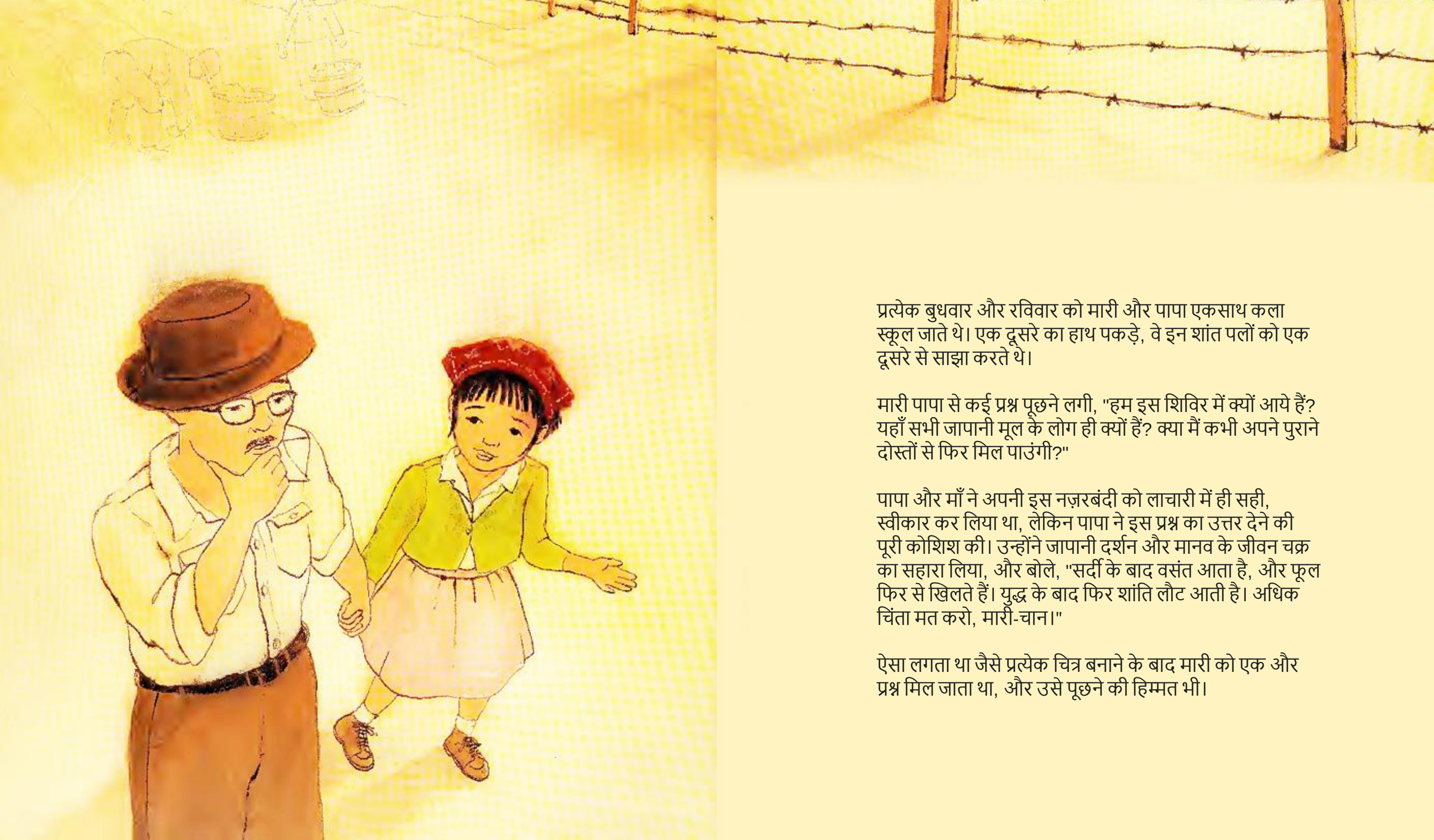

प्रत्येक बुधवार और रविवार को मारी और पापा एकसाथ कला स्कूल जाते थे। एक दूसरे का हाथ पकड़े, वे इन शांत पलों को एक दूसरे से साझा करते थे।

मारी पापा से कई प्रश्न पूछने लगी, "हम इस शिविर में क्यों आये हैं? यहाँ सभी जापानी मूल के लोग ही क्यों हैं? क्या मैं कभी अपने पुराने दोस्तों से फिर मिल पाउंगी?"

पापा और माँ ने अपनी इस नज़रबंदी को लाचारी में ही सही, स्वीकार कर लिया था, लेकिन पापा ने इस प्रश्न का उत्तर देने की पूरी कोशिश की। उन्होंने जापानी दर्शन और मानव के जीवन चक्र का सहारा लिया, और बोले, "सर्दी के बाद वसंत आता है, और फूल फिर से खिलते हैं। युद्ध के बाद फिर शांति लौट आती है। अधिक चिंता मत करो, मारी-चान।"

ऐसा लगता था जैसे प्रत्येक चित्र बनाने के बाद मारी को एक और प्रश्न मिल जाता था, और उसे पूछने की हिम्मत भी।

एक दिन कक्षा के बाद आइको ने मारी से पूछा, "क्या तुम मेरे साथ-साथ घर चलोगी? मेरा परिवार ब्लॉक ४० में रहता है।"

"ज़रूर, इसमें तो बहुत अच्छा लगेगा।," मारी ने उत्तर दिया। "इसके अलावा, उन गार्ड लोगों से मुझे डर लगता है।"

"मुझे भी," आईको ने सहमति जताई। "वे लोग ये बंदूकें क्यों साथ रखते हैं?"

वे दोनों बातों में मगन चले जा रहे थे, और उनका ध्यान ही नहीं गया कि कब आसमान में अँधेरा होने लगा, और तेज़ हवा चलने लगी। अचानक तेज़ हवा में उड़ती धूल, पत्तियां और पेड़ों को नन्ही टहनियां उनके बदन से आकर टकराने लगीं।

"आंधी!" आईको ने चिल्ला कर कहा, और मारी का हाथ पकड़ लिया। उन्होंने भागने की कोशिश की, लेकिन आंधी की वजह से कुछ देख पाना या ठीक से चल पाना बहुत मुश्किल हो रहा था।

बड़ी कठिनाई से धीरे-धीरे दोनों एक साथ किसी तरह मारी की बैरक तक पहुंचे। घर में घुसते ही दरवाज़ा कस कर बंद किया और खांसती-हांफती दोनों फर्श पर निढाल होकर गिर पड़ीं।

माँ दौड़ कर उनके पास आईं। "मारी-चान, आइको-चान, तुम दोनों ठीक तो हो?"

"हम ठीक हैं, माँ," मारी बोली। उसका पूरा बदन सर से पाँव तक धूल से लिपटा था। दोनों ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगीं। दोनों घर पहुँच कर बहुत राहत महसूस कर रही थीं, और एक दूसरे की दोस्ती को पाकर बहुत खुश भी थीं। उसके बाद से दोनों हमेशा कक्षा के बाद साथ ही घर वापस आती थीं।

अगस्त के महीने में, जब कक्षा का अंतिम सप्ताह चल रहा था,श्रीमती हनामोटो ने कहा, "आज तुम सब कुछ ज्यामितीय आकारों का प्रयोग करके चित्र बनाओ।"

मारी ने त्रिकोणों, वर्गों, और चतुर्भुजों का प्रयोग करके उस बैरक का चित्र बनाया जहाँ उसका परिवार रहता था। फिर उसने वृत्तों, सीधी लकीरों, अश्रुबूंदों के आकारों का प्रयोग करके अपने सूरजमुखी के फूल बनाये।

उसने चित्र में खुद को और आइको को भी शामिल किया। सूरजमुखी के फूल उनके सर के ऊपर इतनी ऊँचाई पर थे, कि वे पंजों पर खड़े होकर भी उन्हें नहीं छू पा रही थीं।

पहली बार मारी ने अपना चित्र पूरी कक्षा को दिखाया। जब वह बोल रही थी, तो उसने आइको और श्रीमती हानामोटो के मुस्कुराते चेहरे देखे, जो उसके चित्र के सूरजमुखी फूलों की तरह ही प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

कक्षा के बाद, मारी और आइको साथ-साथ घर को गईं। मारी ने अपने नए चित्र को देख कर कहा, "मैं पिछले तीन महीने से नियम से अपने सूरजमुखी के बीजों में पानी डाल रही हूँ। पता नहीं यहाँ मेरे फूल कभी खिल भी पाएंगे या नहीं।"

अचानक आइको ठहरी, और एक ओर इशारा करके बोली, "वह देखो!"

मारी ने उस तरफ देखा तो पाया कि उसकी बैरक के बाजू में नौ नन्हे-नन्हे पौधे धरती में से सर उठा कर झाँक रहे थे।

"माँ, केंजी, जल्दी आओ। देखो!" उसने उत्साहित होकर कहा। वह उत्सुक थी, कि पापा जल्दी से घर आएं, और वह उन्हें भी वह पौधे दिखाए।

उन पौधों को देख कर मारी को लगा कि वह अपने पुराने दोस्तों को देख रही है। उस क्षण, वह अपने अतीत, और युद्ध के बाद के अपने वर्तमान का अंतर भूल ही गई।